स्वदेशाभिमानसे जागृत समृद्ध भारतका मार्ग प्रशस्त होगा

समाजनीति समीक्षण केन्द्र चेन्नै

Centre for Policy Studies WWW.CPSINDIA.ORG

भारतकी आजकी स्थिति

स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त भारतके साधारण लोगोंने भारतकी विपुल प्राकृतिक सम्पदा एवं भारतके कुटुम्बों एवं सहज समुदायोंमें अवस्थित भारतकी सभ्यतागत पूँजीका समुचित नियोजन करते हुए भारतकी अर्थव्यवस्थाको पुनः समृद्ध बनानेके भरसक प्रयास किये हैं। भारतके वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञोंने राष्ट्रनिर्माणके कार्यमें अपनी क्षमताओंका समुचित उपयोग किया है। उनके प्रयासोंसे भारतकी गणना आज नाभिकीय विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान एवं जैवप्रौद्योगिकी जैसे आधुनिक विषयोंमें अद्यतन ज्ञान एवं तकनीकी क्षमताएँ रखनेवाले विश्वके कतिपय गिने-चुने देशोंमें होती है। भारतीय राज्यने सशक्त आधुनिक अर्थव्यवस्थाकी स्थापनाके लिये अनिवार्य मौलिक औद्योगिक ढाँचा खड़ा करनेके अनेक प्रयास किये हैं, इस कार्य हेतु बड़ी मात्रामें पूँजीका सञ्चयन एवं निवेश किया है। भारतके बड़े उद्योगपतियोंने निजी निगमित क्षेत्रमें ऐसे अनेक विशाल उद्योग स्थापित किये हैं, जिनके सफलतापूर्वक सम्पादनके लिये बहुत बड़ी पूँजी, अत्यन्त परिष्कृत तकनीकी क्षमताओं एवं उच्च स्तरके वित्तीय एवं प्रबन्ध कौशलकी अपेक्षा रहती है। आधुनिक औद्योगिक विश्वकी इन सब विधाओंमें भारतीय उद्योगपतियों एवं प्रबन्धकोंने विशेष दक्षताका परिचय दिया है।

इतना सब होते और करते हुए भी भारतकी अर्थव्यवस्था भारतके विशाल क्षेत्र एवं जनसमुदाय, भारतकी असाधारण प्राकृतिक सम्पदा एवं भारतकी महान् सभ्यतागत परम्पराओंसे प्राप्त विशिष्ट दक्षताओं एवं उत्तरदायित्वोंके अनुरूप स्तरपर तो नहीं पहुँच पाई है। आर्थिक समृद्धिके अधिकतर सूचकोंके अनुसार भारत अपने समान विशाल और प्राकृतिक एवं सभ्यतागत सम्पन्नताकी दृष्टिसे अपने निकट आनेवाले कतिपय देशोंसे बहुत पीछे दिखायी देता है। अनाज, लौह एवं इस्पात, सीमेंट, विद्युत और कोयला जैसी मूलभूत वस्तुओंका भारतमें प्रतिव्यक्ति उत्पादन एवं उपभोग विश्वके अन्य बड़े देशोंकी अपेक्षा अत्यल्प है।

अधिकारी तन्त्रका हस्तक्षेप, महानगरीय सम्भ्रान्त वर्गकी उदासीनता और वैश्वीकरणके नये शक्ति-परीक्षणमें हमारे बड़े लोगोंकी अनभिज्ञता भारतके आर्थिक क्षेत्रमें पिछड़ते जानेके लिये कुछ सीमातक उत्तरदायी है। हम एक ऐसी महान् सभ्यताके वंशज हैं जो अनेक सहस्राब्दियोंतक मानवीय उपलब्धिके प्रत्येक क्षेत्रमें विश्वमें अग्रणी रही है। स्वतन्त्रताप्राप्तिके पाँच-छः दशकों उपरान्त भी अनेक क्षेत्रोंमें विश्वसे पीछे दिखायी देना हमें शोभा नहीं देता। हमें मिल बैठकर गम्भीरतासे विचार करना चाहिये कि आजके विश्वमें हमें उस महानता, गौरव एवं प्रतिष्ठाको कैसे प्राप्त करना है जो भारतभूमि एवं भारतके लोगोंका सहज प्राप्य है।

विश्वकी तुलनामें आजकी भारतीय अर्थव्यवस्था

	भारत	चीन	संयुक्तराज्य अमरीका	वर्ष
जनसंख्या (करोड़)	१०२.५	१२९.२	२८.६	२००१
विश्वकी जनसंख्याका प्रतिशत	१६.७	२१.१	४.७	२००१
अनाज उत्पादन (करोड़ टन प्रतिवर्ष)	१९.८	३४.८	३२.३	२००१
अनाज उत्पादन (किलोग्राम प्रतिव्यक्ति)	१९३	२७०	१,१३१	२००१
अनाज उत्पादन (किलोग्राम प्रतिहेक्टेयर)	१,६६८	४,०८३	५,७८४	२००१
लौह उत्पादन (करोड़ टन प्रतिवर्ष)	२.७	१२.७	१०.२	२०००
कोयला उत्पादन (करोड़ टन प्रतिवर्ष)	३२.८	१११.८	११०.०	१९९९
विद्युत उत्पादन (अरब यूनिट प्रतिवर्ष)	५१०	१,२०६	३,६१३	२०००
सीमेंट उत्पादन (करोड़ टन प्रतिवर्ष)	८.५	५१.४	८.६	१९९८
कच्चा तेल (दस लाख टन प्रतिवर्ष)	३५	१६०	४५०	१९९९
टीवीसेट (कुल, करोड़ोंमें)	६.३	४०.०	२१.९	१९९७
टेलीफोन (चल-अचल, प्रति १००० व्यक्ति)	५२	३२८	१,१३४	२००२
इण्टरनेट उपभोक्ता (लाखोंमें)	१६६	५९१	१,५९०	२००२
प्रत्यक्ष विदेशी पूँजी निवेश (अरब डालरमें)	३	४९	४०	२००२
निर्यात (वार्षिक, अरब डालरमें)	७८	३७६	१,०१९	२००२
आयात (वार्षिक, अरब डालरमें)	८०	३३७	१,८९३	२००२
सकल उत्पादन (प्रतिव्यक्ति, डालरमें)	४७०	९६०	३५,४००	२००२

अनुस्मरण

प्रकृतिने भारतको विश्वकी सर्वाधिक उर्वर भूमिसे सम्पन्न किया है और सहज शस्यश्यामला इस भूमिको विश्वकी कदाचित् सर्वाधिक सुरक्षित भौगोलिक सीमाओंके भीतर संजोया है। व्यापक उर्वर मैदानों, सर्वत्र प्रवाहित हो रही महान् नदियों और वर्षा एवं धूपके प्राचुर्यसे युक्त इस भूमिके तुल्य अन्य भूखण्ड विश्वमें अन्यत्र नहीं है। प्रकृतिप्रदत्त इस असाधारण सम्पदाके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनेके लिये ही भारतके लोग हिमालय समान पर्वत, गङ्गा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु एवं कावेरी समान नदियों, और सूर्य एवं वर्षाके देवोंका प्रतिदिन स्मरण करते हैं।

सहज प्राचुर्य एवं संरक्षासे सम्पन्न इस भूमिको पाकर भारतीयोंने एक ऐसी विशिष्ट सभ्यताकी रचना की है जिसके आध्यात्मिक एवं भौतिक वैभवकी कोई समानता नहीं है। भारतीयोंने अपने धर्म एवं सभ्यतासे सृष्टिके सब भावोंके साथ अनुशासित सामञ्जस्यसे रहने और समस्त जड़-चेतन भावोंका प्रयत्नपूर्वक भरण करनेकी शिक्षा पाई है। कुटुम्बों एवं सहज समुदायोंमें आश्रित एक ऐसी समाज-व्यवस्थाकी संरचना की है जिसके माध्यमसे समाज स्वयं अनुशासित एवं नियन्त्रित होता रहता है। और उन्होंने अपनी सहज प्राकृतिक सम्पदासे भौतिक समृद्धि अर्जित करनेकी ऐसी परिष्कृत दक्षताओंका विकास किया है कि चौथी शताब्दी ईसा पूर्वके यूनानी योद्धा सिकन्दरसे लेकर उन्नीसवीं ईसवी शताब्दीके प्रारम्भतक भारत आनेवाले सब विदेशी पर्यवेक्षक हमारी समृद्धिको देखकर चकित होते रहे।

शेष अगले पृष्ठपर...

अनुस्मरण

ब्रितानी शासकोंके भारतपर आधिपत्य जमानेके साथ ही भारत दरिद्रता एवं तेजोहीनताके कालमें प्रविष्ट हुआ। अन्धकारके बादल तो कदाचित् १००० ईसवीसे घिरने लगे थे। तथापि विदेशी शासकोंके आधिपत्यका यह काल भारतीय सभ्यताके अतिदीर्घ इतिहासमें नगण्य-सा ही है। स्वतन्त्रताप्राप्तिके उपरान्त भारत अपनी अस्मिता एवं तेजस्विताको पुनः प्राप्त करने लगा है। अद्यतन विज्ञान एवं तकनीकके क्षेत्रोंमें भारतकी उपलब्धियाँ निश्चय ही उल्लेखनीय हैं। हमने देशके औद्योगिक पुनरुत्थानके लिये पर्याप्त सुदृढ़ मौलिक ढाँचेका निर्माण किया है। भारतके कुटुम्ब और सहज समुदाय दीर्घ कालसे अर्जित अपने सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी संसाधनों एवं दक्षताओंका पुनः नियोजन कर भारतके पुनर्निमाणमें सहभागी बनने लगे हैं।

भारतका यह बहुपक्षीय पुनरुत्थान अभी सीमित ही है। भारतका साधन-सम्पन्न एवं बोलनेमें अति प्रखर महानगरीय सम्भ्रान्त वर्ग भारतभूमिकी सहज सम्पदाओं, भारतीय सभ्यताकी विशिष्ट उपलब्धियों और भारतके लोगोंकी असाधारण दक्षताओंके प्रति आश्वस्त नहीं है। भारतका यह सम्भ्रान्त वर्ग सहज अनुशासनमें आबद्ध कुटुम्बों, ग्रामों एवं समुदायोंमें व्यवस्थित और भारतीय सभ्यतामें आश्रित साधारण भारतीयोंके सनातन भारतके साथ सहयोगके लिये तत्पर नहीं है। यही कदाचित् भारतके सशक्त एवं सर्वपक्षीय पुनरुत्थानके मार्गमें सबसे बड़ी बाधा है।

भारतके साधन-सम्पन्न प्रखर महानगरीय सम्भ्रान्त वर्गके आधुनिक भारत और अनुशासित कुटुम्बों, समुदायों एवं ग्रामोंके सनातन भारतके मध्य सामञ्जस्य स्थापित करना और उन्हें एक दूसरेका सहयोगी बनाना आजके भारतकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। ऐसा सामञ्जस्य एवं सहयोग स्थापित होगा तो उस वैभव एवं गरिमाको शीघ्र पुनःस्थापित करनेमें कोई बाधा शेष नहीं रहेगी जो भारत का सहज प्राप्य है।

प्रबुद्ध एवं जागृत भारत

भारतवर्ष श्रीरामके महान् एवं अनन्य सेवक श्रीहनुमान् के समान ही है। हनुमान् अतुलित बलके स्वामी हैं, और साथ ही ज्ञानियोंमें वे अग्रगण्य हैं। परन्तु जबतक जाम्बवान् उन्हें अपनी शक्ति एवं प्रतिभाका स्मरण नहीं करवाते वे अपनेको भूले ही रहते हैं। अपनी शक्ति एवं प्रतिभाका स्मरण होते ही वे अपने स्वर्णभूधराकार स्वरूपमें प्रकट होकर एक ही छलाँगमें समुद्रोंको लाँघ जाते हैं। भारतको आज अपनी अतुलनीय भौतिक सम्पदाओं और अपने विशिष्ट ज्ञानका स्मरण करवानेवाले किसी जाम्बवान्की प्रतीक्षा है। अपनी महिमा एवं उत्तरदायित्वका स्मरण करते ही भारत आध्यात्मिक एवं भौतिक सम्पदामें विश्वका अग्रणी होनेकी अपनी सहज स्थितिको पुनः प्राप्त कर लेगा।

यहाँ भारतको अपनी भौतिक एवं आध्यात्मिक महिमाका स्मरण करवानेका किञ्चित् प्रयास किया गया है। यह प्रयास आधुनिक कालमें भारतीय सभ्यताके चिरप्रतीक्षित पुनरुत्थानको गति देनेमें सहायक हो, यही हमारी कामना है।

कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना। बुधि बिबेक बिग्यान निधाना॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं॥
राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्बताकारा॥
कनक बरन तन तेज बिराजा। मानहुँ अपर गिरिन्ह कर राजा॥
सिंहनाद करि बारहिं बारा। लीलहिं नाघउँ जलनिधि खारा॥